

भक्ति - एक पूर्ण दृष्टिकोण

प्रभात रश्मि:

24 मई 2011



स्वामी भूमानन्द तीर्थ

हरिः ओम् तत् सत् जय गुरु,

मैं चाहता हूँ कि आपलोग मुझे बहुत ही ध्यान और प्रेम से सुनें।

जब कृष्ण अर्जुन और उद्धव को उपदेश करते हैं तो प्रायः कहते हैं, “तुम मेरे भक्त हो और तुम मुझे प्रिय हो इसीलिए मैं तुम्हें यह रहस्य बताता हूँ”। इस दृष्टिकोण को आप समझें अन्यथा आप इससे चूक जाएंगे।

मेरे पास मेरे एक शिष्य, एक भक्त का ईमेल आया है जिसमें उसने विस्तार से लिखा है कि किस तरह उसकी मां तीव्र पीड़ा और यातना से गुजर रही है और कराह रही है। जब बेटा मां को कहता है कि, “तुम भगवान के बारे में सोचो” तो वह भगवान को सोचने में असमर्थ है। पीड़ा इतनी तीव्र है। बेटा इस बात से खुश नहीं है कि मां ऐसा नहीं कर पा रही है। और वह यह भी कहता है कि, “मैं ऐसा नहीं बनना चाहता हूँ; मैं हमेशा भगवान के विचार और याद में जीना चाहता हूँ। इस काम को शीघ्र शुरू हो जाना चाहिए। आपने जब मुझे दीक्षा दिया था, मुझे तो तभी से इसे लगन से शुरू कर देना चाहिए था। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।” इत्यादि।

उसने जो भी कहा उससे मुझे बहुत दुःख हुआ। यह बड़ी गलतफहमी है। जब कोई तेज दर्द से पीड़ित होता है, यह दर्द कौन बनाता है? शरीर। कोई भी शरीर दर्द पैदा करता है जीव-वैज्ञानिक या अन्य कारणों से जो कि शरीर के अस्तित्व और कार्य-प्रणाली को नियंत्रित करता है। अतः दर्द इसकी सूचना देता है कि कहीं गड़बड़ है। दर्द की मात्रा और तीव्रता, जो हम महसूस करते हैं, वह उसी अनुपात में होता है जितनी कि गड़बड़ी होती है। जब ऐसा दर्द हो तो तुरंत ही इसका उपचार होना चाहिए। ऐसी भी स्थिति होती है, जहां कोई खराबी दर्द पैदा करता है और उस खराबी का कोई उपचार नहीं होता है। यही समय होता है जब रोगी को मारफिया इत्यादि के प्रभाव में रखा जाता है। जब दर्द हो रहा हो तो क्या किसी व्यक्ति के लिए यह सही होगा कि वह इसे भूल जाए या इसे लंबित रखे और भगवान के बारे में सोचे? या दर्द का उपचार होना चाहिए! अगर दर्द से छुटकारा न हो सकता हो और डाक्टर कहता है कि वह कुछ नहीं कर सकता है तो उस समय आपत्काल उपाय के रूप में रोगी जानबूझ कर दर्द को भूलने की या उपेक्षा करने की सोच सकता है। इसके लिए भी हमारे अंदर इच्छा और इच्छा-शक्ति होनी चाहिए। जब शरीर में इतनी गहरी पीड़ा हो तो मन अपनी इच्छा-शक्ति को दूसरी दिशा में ले जाने में असमर्थ होगा। यह संभव नहीं हो सकता है। जब हम शरीर से चुस्त होंगे तभी हम अपने को व्यक्त कर सकते हैं या सोच सकते हैं। यदि हम स्वस्थ नहीं हैं, अत्यंत भूखे हैं, थके हैं, दर्द और यातना से पीड़ित हैं, तो क्या हम मन और बुद्धि से अच्छी तरह काम कर सकते हैं? बिल्कुल नहीं! मन से शरीर का संबंध अभिन्न सा है। आपको इसे समझना होगा।

दूसरी बात - क्या यह दृष्टिकोण, “मुझे भगवान के बारे में सोचते हुए ही इस दुनिया से विदा लेनी चाहिए और इसके लिए मुझे भगवान का विचार अभी से ही पैदा करनी चाहिए”, क्या यह सोचने का सही तरीका है? मैं कहना चाहूंगा, “नहीं! बिल्कुल नहीं!”

हमलोग भगवद् गीता के दूसरे अध्याय की चर्चा कर रहे थे और अब तीसरा अध्याय है। श्रीकृष्ण क्या कहते हैं? वह विश्लेषण कर रहे हैं और बता रहे हैं कि यह संपर्क हमारे शरीर की इन्द्रियों और चारों ओर बिखरी वस्तुओं के बीच है। यह संपर्क निश्चित रूप से ही सुख और दुःख विकल्पों को पैदा करता है। सही दृष्टिकोण दोनों को ही सहने का और सुख के प्रति राग और दुःख के प्रति द्वेष को छोड़ने का होना चाहिए।

हमारे सभी संपर्कों के परिणामस्वरूप बने विकल्पों, अनुभवों के प्रति समता पैदा करने के लिए हर समय एक अवसर है, हर दिन एक अवसर है। चूंकि संपर्क होता ही रहेगा, संपर्कात्मक प्रभाव भी होगा। हमें केवल इतना ही करना है - सुख को पसंद नहीं करना है, और इसलिए दुःख को नापसंद नहीं करना है। इस समता को पाने के लिए आपको भगवान के बारे में सोचना ही चाहिए - इसके बारे में आपको स्वयं ही पता लगाना होगा। भक्ति की भाषा में मैं जो कहना चाहता हूँ, भगवान के बारे में सोचना और शरीर छोड़ना बहुत बाद में आता है। भक्ति का उद्देश्य क्या सिर्फ भगवान के बारे में सोचना और दुनिया से विदा होना है या भक्ति का आनंद, आह्लाद और परिपूर्णता अभी इसी समय जितनी जल्दी हो सके लेनी चाहिए? अब यदि आप भक्ति का आनंद और परिपूर्णता पाना चाहते हैं तो आपको ज़्यादा से ज़्यादा भक्ति के गुण अपनाने होंगे जिसमें 'समत्त्व' एक महत्वपूर्ण गुण है।

इसके बाद आपको सब को भगवान की तरह अनुभव करने में समर्थ होना चाहिए। पूरी दुनिया भगवान है। आप दुनिया से घिरे हैं अतः आप भगवान से घिरे हैं। हमारा शरीर पंचभौतिक है। इसका अर्थ हुआ आप सिर्फ घिरे हुए नहीं, आप पंचभूतों की भगवत्ता से भरे हैं। पंचभूतों के बाद मन, बुद्धि और अहंकार है। ये भी प्रकृति के भाग हैं। वे भगवान का प्रदर्शन और प्रकटीकरण हैं। तो भगवान रहित कहां है? संसार भगवान है, शरीर भगवान है, मन भगवान है, बुद्धि भगवान है, अहंकार भगवान है; जहां तक आत्मा का संबंध है इसे कुछ नहीं होना है, इसे कुछ नहीं हुआ है।

जितना ज़्यादा आप अनुभव करते हैं, समझते हैं आप इसी प्रकार के व्यापक दृष्टिकोण के द्वारा शासित होने लगते हैं। व्यापक दृष्टि - इसी की आवश्यकता होती है, भक्ति की भाषा और प्रक्रिया में, मेरे प्यारे आत्मन्। अपने जीवन की अंतिम क्षण की प्रतीक्षा न करें। यह कितना छिछला और गलत है! मृत्यु कभी तो आयेगी, बहुत बाद में हो सकता है, कई दशकों के बाद। मृत्यु के नाम पर आप सोच रहे हैं और इस दुनिया में भक्ति को केन्द्रित कर रहे हैं, एक उपहार के रूप में, भगवान को याद करने और मरने के लिए। मैं समझता हूँ यह भक्ति का अपमान है। आपको यहीं रहते हुए भक्तिमय आह्लाद के साथ जीना है, घूमना है, गाना और नाचना है। जब भी कोई गंभीर स्थिति या भाग्य घटता है - मेरे शब्दों पर ध्यान दें - जब भी कोई गंभीर स्थिति या भाग्य घटे तो उस गंभीर स्थिति या भाग्य को अर्थपूर्ण होने के लिए आपको उससे गुजरना होगा। किसी अनुभव से गुजरने में ही संपन्नता और परिपूर्णता है।

अतः जीवन में जो भी आए, जीवन में जो भी जाए, बस! उसे स्वीकार करें और उससे गुजरें। यदि कोई उपस्थिति है तो उस उपस्थिति को अनुभव करें, उससे गुजरते हुए। यदि कोई अनुपस्थिति है तो उस अनुपस्थिति का अनुभव करें और उस अनुपस्थिति से गुजरें। सभी अनुभव गुजरने के लिए है और अनुभव से गुजरने में ही संपन्नता, विस्तार, पूर्णता और प्रबुद्धता है।

एक भक्त जो अपने मन में, दृष्टिकोण और समझ आदि में इस प्रकार की एकरसता रखता है वह इतना उत्कृष्ट और ऊंच हो जाता है कि कृष्ण कहते हैं, “मैं उसका अनुसरण करता हूँ। किसलिए? ताकि उसके पैरों की धूल मेरे शरीर पर पड़े और मैं शुद्ध हो जाऊँ।”

इसलिए क्या आप दबू होना चाहते हैं? और अमुकवें स्तर के! अमुक स्तर का अर्थ है अंतिम संख्या - अमुक स्तर का भक्त या क्या आप सर्वोत्तम भक्त होना चाहते हैं? यदि आप एक सर्वोत्तम भक्त हैं तो भक्ति का इस प्रकार उपयोग करें कि आपका भगवान के पीछे दौड़ने के बदले भगवान स्वयं ही आपके पीछे हों। उन्हें अपने हृदय में रखें और उन्हें कहें कि वे सदा वहीं रहें। जितनी देर वे वहां रहेंगे वह आपको अनुचित चोट नहीं पहुंचायेंगे। अतः किसी भी गंभीर स्थिति या भाग्य के प्रति सही दृष्टिकोण होगा - इससे गुजरें, इससे गुजरें, इससे गुजरें, पता करें कि क्या कोई संभव उपचार या उपाय है। पीडा ऐसी सूचना दायक है कि इसकी अनुपस्थिति में हम जीवित ही नहीं रह सकते।

इसलिए भक्ति का वर्गीकरण एक प्रणाली के रूप में न करें जिसके द्वारा आप शरीर छोड़ते समय भगवान को याद करते हैं। यह बहुत बाद में आता है। आप सिवाय भगवान के और किसी चीज़ को याद नहीं कर सकते हैं। सभी यादें एक समान भगवतमय है। आपकी स्मृति दुनिया के बारे में है और दुनिया भगवतमय है। इसलिए दुनिया की भगवतमयता को स्वीकार करें, आपकी अपनी भगवतमयता, मन, बुद्धि, अहंकार और सब की भगवतमयता - इस प्रकार की व्यापक, पूर्ण दृष्टिकोण - यही श्रेष्ठ और सबसे आसान और पूर्णतादायक है।

हरिः ओम् तत्सत्, जय गुरु!

* * *



Narayanashrama Tapovanam

Venginissery, P.O. Ammadam, Trichur, Kerala – 680563, India

Email: ashram1@gmail.com; Website: <http://www.swamibhoomanandatirtha.org>